

चरन शर्मा,

बी-405 कल्पिता, सहार मार्ग
अंधरी (पूर्व) बम्बई 400069
॥ अप्रैल 1985,

आदरणीय श्री राजा को चरन व मिमीक्षा का सप्रेम नमस्कार,

लम्बी चूप्पी के बावजूद एक धीमी सी चटचटाहट कितनी
आनन्ददायक सी लगती है। आपका सुन्दर लिखावट
पाना धारा धारा स्नेहसा भरा स्वतः पात्र मन
को एक अपार खुशी प्राप्त हुई, इस प्रसन्नता का
अन्दाजा लगा पाना किसी भी आधुनिक यंत्र के
वर्ष की बात नहीं है।

लगता है सारे सम्बन्ध कहीं न कहीं जीली नकीती
रूप में अपने को दोहराते हैं। और ये दोहरना
कितना सुखमय होता है। सारी की सारी बातें
घटनाएँ एक साफ चलचित्र की भाँती आँखों के
सामने से गुज़र जाती हैं। और कुछ क्षण ऐसे
लगते हैं कि इन सब घटनाओं के पात्र हमारे
आसपास घूम रहे हैं।

आपका पत्र एक पत्र नहीं है एक नई प्रेरणा देने
वाला दस्तावेज़ है और इस दस्तावेज़ का
अन्दाजा कुछ ऐसा है की जीपक भर भूला नहीं सकते,
बम्बई में आपका साविध, आपका स्नेह, अब
एक सपना सा लगता है, और हम चाहते हैं कि
वा सपना बार बार देखें, बार बार दोहराएँ
चाहे कितना भी एकरस क्यों न हो इस एकरसता
का ताँड़ा नहीं जा सकता, क्योंकि इसमें जो
स्नेह धार है वो ही इसे बाँधे रखता है।

आजकल में नयी कृतियों की रचना में लगाई और नए नए इस्तेमाल खोजे जा रहे हैं।

गोबरी ध्यान एक महिने से अधिक हो गया है अब ज्यादा समय अपने पास है यानी की खुद के पास है इस स्वयं को देखना भी एक दूसरे का है, इस पहचान पाना थोड़ा कठिन हो रहा है।

पिछले दिनों भारत में एक अजीब घटना घटी गोपाल जोशी तो नहीं कहेंगे परन्तु दिल में कुछ कहती सी कुछ हिला देने वाली घटना, गीतकी कल्पना करना कठिन सहाज नहीं है गीत के कितने रूप होते हैं।

द्वेज की धृति पर आराम से यात्रा कर रहे यानी हवा के झोंके में, सुबह करीब डेढ़ बजे का समय होगा, द्वेज एक पुल पर से गुजरती है, और बिना कुछ रुके पचास के करीब आधी इस शक्तियों को बेखबर धड़ देते हैं।

पुल पर रंगारंग का कार्य चालू होने की वजह से पल पर लकड़ी की फलियाँ बंधी हुई थी किसी को भी इसका पता नहीं था बेखबरता कारण की ऐसा होता नहीं है। उन फलियों से टकरा कर नदी में कितनी ही लास उठती होगी

इसने पचास मिनट बाद इसी गाड़ी में
भी यही घटना को इबारा दोहराया, जब गाबर
जहाँ पालनवे स्टेशन पर पता चलाना की
ट्रेन के डिब्बों के ऊपर बैठे यात्रियों का का
हुआ, ट्रेन के अन्दर डिब्बों में बैठने की जगह
नहीं होने लगी यात्री ऊपर बैठते हैं,

सारी घटना अखबारों में पन्ना में एकतरफ़ से
गही पाया, भरे देश में काय कि बुद्ध न उध
घटना ही है,

काली बुद्ध लिखन को मन कर रहा है
परन्तु बाधा करता है आपको हर महीने में
एक पत्र गहर मिलेगा, भाशा है आप भी
गहर लिखेंगे,

~~श्रीमती~~ श्रीमती रजा की भारी याद देव;

श्रीमान्गल.

आहें।

7/11/80